*Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science*
*Vol. 2, Issue 1 - 2019*

# जनजातीय क्षेत्र में आधुनिक कृषि पद्धतियां एवं आर्थिक प्रभाव (म.प्र. के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. नाहारसिंह बर्डे*

## प्रस्तावना

स्वतंत्र भारत के सार्वाधिक योगदान कृषि एवं कृषि से जुड़े कार्यो से ही प्राप्त होता था किंतु समय के साथ–साथ कृषि का योगदान धीरे–धीरे धटता जा रहा है। 1950–51 में यह 55.40 प्रविशत था जो 2013–14 में घटकर 13.9 प्रतिशत ही रह गया है। इसके विपरीत जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्वि हो रही है। इसलिए देश में खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्वि करने के लिए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि विकास को प्राथमिकता दी गई। कृषि विकास के लिए देश में सामुदायिक विकास कार्यक्रम, सघन कृषि योजना,उन्नत बीजों का आविष्कार एवं उपयोग, उर्वरकों, किटनाशकों दवाईयों का उपयोग, कृषि क्षेत्र में आवश्यक ऋण की उपलब्धि हेतु बैंकों का राष्ट्रीयकरण, कृषि बीमा आदि के साथ–साथ कृषि की उन्नत विधियों का आविष्कार अर्थात आधुनिक कृषि पद्वतियों का उपयोग किया जाने लगा।

जनजातीय क्षैत्रों में कृषि उद्योगों में असंख्य, अशिक्षित, असंगठित, रूढ़िवादी कृषक होते है जो उत्पादन हेतु अन्य साधनों की अपेक्षा श्रम साधन को अधिक उपयोग करके जीविकोपार्जन करते है। अपनी अज्ञानता एवं धन की कमी के कारण जनजातीय कृषक कृषि से संबंधित विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों,योजनाओं एवं अन्य विकासात्मक गतिविधियों से अछुते रहे है। शिक्षा एवं जागरूकता के अभाव में इनके द्वारा स्थानांतरित कृषि की जाती रही है। जंगलों में घूम–धूमकर पेड़ पौधों को काटना, जलाना, जमीन खोदना और उस पर बीज बिखेर देना तथा जो उत्पादन होता उसी से अपना जीवन निर्वाह करना ही कृषि कार्य में शामिल था।

जब धीरे–धीरे जमीन की उर्वरा–शक्ति कम होती गई परिणामस्वरूप उत्पादन कम होने लगता। ऐसी स्थिति में ये लोग अपना स्थान बदल दिया करते थे। धीरे–धीरे इस प्रक्रिया में बदलाव आया और एक ही स्थान पर स्थायी कृषि की जाने लगी। स्थाई खेती करने पर भी जनजातीय वर्ग अपने क्षेत्रों मे पर्याप्त उत्पादन नहीं कर पाए क्योंकि वे परंपरागत साधनों का उपयोग करते थे साथ ही श्रम आधारित कृषि कार्य को प्राथमिकता में शामिल करते हुए खेती करते थे। धीरे–धीरे लोगों में शिक्षा व जागरूकता आई एवं उन्नत संसाधन एवं तकनीक इनकी पहुँच में आई परिणामस्वरूप वर्तमान में जनजातियों की आर्थिक स्थिति में बदलाव परिलक्षित होने लगें है। जनजातियों को कृषि में आधुनिक पद्धतियों को अपनाने के लिए वर्तमान मे कृषि उत्पाद की बढ़ती माँग ने भी प्रेरित किया।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे अगर देखें तो इन जनजातियों ने शिक्षा, जागरूकता, एवं सरकारी प्रयासों के द्वारा कृषि में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया हैं। कृषि कार्य में परंपरागत साधनों का उपयोग पूर्णतः बंद तो नही किया जा सका है लेकिन इसके

*सदस्य, पदिमनी वेलफेयर सोसायटी फॉर सोशल डवलपमेण्ट एण्ड रिसर्च, उज्जैन, म. प्र.

*© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.*

साथ–साथ आधुनिक कृषि पद्धतियों एवं आधुनिकतम साधनों का प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार जनजातीय क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र में आधुनिक पद्धतियों की शुरूआत होने लगी है।

## अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य खरगोन जिले का चयन किया गया है, जिले के चयन के पश्चात तीन ऐसे विकासखण्डों का चयन किया गया है, जिसमें सबसे अधिक आदिवासी जनसंख्या निवास करती है इस आधार पर जिले की भगवानपुरा (80.83%),झिरन्या (80.05%), तथा सेगाँव (74.20%), विकासखण्डों का चयन किया गया है। इन तीनों विकासखण्डों में आदिवासियों की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है। इसके बाद तीनों विकासखण्डों से 5–5 गाँवों का चयन किया गया है तथा प्रत्येक गाँव से 20–20 आदिवासी कृषक परिवारों का चयन किया गया है।

## परिकल्पना

1. आधुनिक कृषि पद्धतियों का आदिवासी कृषकों की आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

## शोध व्याख्या

### आधुनिक कृषि पद्धति के उपयोग से आर्थिक स्थिति पर प्रभाव के संबंध में अभिमत

शोध क्षेत्र में आदिवासी कृषकों द्धारा आधुनिक कृषि का पद्धति का उपयोग करने से उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रभाव के संबंध में जो तथ्य प्राप्त हुए है, उन्हे तालिका क्र. 1.1 (अ) में दर्शाया गया है–

**तालिका क्र.1.1 (अ).आधुनिक कृषि पद्धति के उपयोग से आर्थिक स्थिति पर प्रभाव के संबंध में अभिमत**

| क्र. | आधुनिक कृषि पद्धति का उपयोग | आर्थिक स्थिति में सुधार | | कुल योग |
|---|---|---|---|---|
| | | हाँ | नही | |
| 1. | हाँ | 204 (68.00) | 96 (32.00) | 38 |
| | कुल योग | 204 (100) | 96 (100) | 300 |

उक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि 68 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक कृषि पद्धति को अपनाने से अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार मानते है,जबकी 32 प्रतिशत उत्तरदाता कोई प्रभाव नही मानते है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के आदिवासी उत्तरदाता अपने कृषि कार्य में विभिन्न प्रकार की आधुनिक कृषि पद्धति का उपयोग करते है।

अध्ययन किए गए विकासखण्डों के आदिवासी कृषकों की आर्थिक स्थिति एवं आधुनिक कृषि पद्धति के मध्य स्वतंत्रता परीक्षण (Test of Independent) करने के लिए $x^2$ Test उपयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत शून्य परिकल्पना (H01) निम्नलिखित है–

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

*H01 :– आधुनिक कृषि पद्धति का आदिवासी कृषकों की आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।* इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए तालिका में दर्शाए गए आँकडो के $X^2$ Test के जो परिणाम प्राप्त हुए है, उन्हें तालिका क्र. 1.1 (ब) में दर्शाया गया है–

तालिका क्र. 1.1 (ब).Chi -Square

| Calculated value $x^2$ | d.f. | Table value $x^2$-05 | Result |
|---|---|---|---|
| 38.880 | 1 | 3.841 | Ho1 =Rejected |

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि 1 d.f. ds 5% सार्थकता स्तर पर $x^2$ का तालिका मूल्य (3.841) $X^2$ के परिगणित मूल्य (38.880) $x^2$ के गणना मूल्य से कम है। अर्थात $x^2t < x^2c$ है। अतः हमारी शुन्य परिकल्पना (H01) अस्वीकार की जाती है।

## समस्याएँ एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध पत्र में जनजतीय क्षैत्र में आधुनिक कृषि पद्वतियों के अपनाने के संबंध में दो पहलु सामने आएँ है। जिसमें एक तरफ नई पीडी के बच्चे जो शिक्षित होने लगे है वहॉ उन्नत खेती देखने को मिलती है वही दुसरी ओर जनजातीय लोगों में उन्नत खेती के प्रति इतनी जागरूकता नही है। जिस प्रकार देश को विकसित होते हुए हम देखना चाहते है। किंतु आदिवासी कृषको की जागरूकता के संबंध में भी सकारात्मक परिणाम आने लगे है।

प्रस्तुत शोध पत्र में समस्याएँ एवं सुझाव निम्नलिखित हो सकते है :–

- अधिकांश आदिवासी कृषकों की आय का स्तर निम्न है, इस स्थिति में उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए साहूकारों एवं महाजनों से ऊँची ब्याज दर पर काफी मात्रा में ऋण लेना पड़ता है। इस कारण से उनका लंबे समय तक शोषण होता रहता हैं। इस हेतु सुझाव यह है कि आदिवासियों का बैंकिग प्रकिया से परिचित करवाया जाना आवश्यक होगा।
- आधुनिक कृषि पद्वतियों के अपनाने से जमीनों मे पानी की उपलब्धता जो कि नलकुपों आदि के माध्यम से पानी निकाला जा रहा है जिससे पेयजल एवं जमीन की उर्वरा शक्ति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस संबंध में शासन को अधिक से अधिक जलसंवर्धन नीति पर जोर देना चाहिए एवं देश विभिन्न मुख्य नदियों वापस में जोड़ा जाना चाहिए।
- कृषि में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से एक तरफ सकारात्मक परिणाम है वही पर इसके दुष्परिणाम जैसे पर्यावरण पर प्रभाव,वित्तिय ऋणग्रस्तता,पानी की उपलब्धता आदि के परिणाम भी दिखने लगे है।

इस हेतु आवश्यक है कि कृषि में मँहगी तकनीकों के प्रयोग प्रत्येक कृषक वर्ग नही कर पाता है साथ अत्यधिक उत्पादन के लालच में ऋणग्रस्तता के जाल में फँस जाता है। साथ ही पर्यावरण के उपर होने वाले प्रभावों को भी दृष्टिगत रखना आवश्यक होना चाहिए।

*© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.*

## निष्कर्ष

निष्कर्ष यह निकलता है कि आधुनिक कृषि पद्धति के अपनाने के परिणामस्वरूप यह बात भी ध्यान रखना चाहिए की इसके अपनाने से एक ओर लाभ दिख रहा है तो वहीं दूसरी ओर इसके दुष्परिणामो जैसे पर्यावरण पर प्रभाव,वित्तिय ऋणग्रस्तता,पानी की उपलब्धता आदि को भी नजर अंदाज नही किया जा सकता है। किंतु नवीन तकनीकि, उन्नत संसाधन एवं उन्नत बीजों आदि से जनजातीयों कि आर्थिक स्थिति में एवं रहन सहन में सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है।

## सन्दर्भ सूची

1. हसनैन नदीम, (2000) ''जनजातीय भारत'' रवि मजूमदार, जवाहर पब्लिर्स एंड डीस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली पृ. सं. 1.
2. अग्रवाल डॉ. एन. एल. (2008) ''भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर पृ.सं. 580–595.
3. शुक्ल एवं सहाय, ''सांख्यिकी के सिद्वान्त'' साहित्य भवन पब्लिकेशन,आगरा पृ.स.–613.
4. आर.एल. पाटनी, *''कृषि अर्थशास्त्र''* संजीव प्रकाषन मेरठ पृ.सं.–24.
5. स्त्रोत–जिला सांख्यिकीय पुस्तिका खरगोन (म.प्र.)

*© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.*